IJAER/January-February-2025/Volume-14/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

भारतीय चित्रकला की परम्परा और साहित्य

डॉ0 सूरज पाल साहू
सह–आचार्य (चित्रकला विभाग)
बरेली कॉलेज, बरेली
म0ज्यो0फु0रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

भारतीय सभ्यता में कला का तात्पर्य केवल मनोविनोद अथवा भोगविलास नहीं रहा है। कलात्मक आवरणों में तत्ववाद, कलात्मक विस्तार और ऐतिहासिक परम्परा का प्रच्छन्न प्राधान्य ही पाया जाता है। आंगल और तन्त्र ग्रन्थों में कला का दार्शनिक अर्थ ही महत्वपूर्ण माना गया है। चित्रकला में अन्तर्निहित तत्ववाद को भारतीय चित्रकारों ने सदैव समझा और उसे चित्रण में प्रयोग किया है। जिसकी विश्रान्ति योग में है, वहां कला बन्धन है परन्तु जिसका संकेत परमतत्व की ओर ले जाता है वही वास्तव में शुद्ध कला (चित्रकला) है।

धर्म ही काल्पनिक जीवन का स्वरूप है। धर्म तो दावा करता है कि उसका सीधा प्रभाव व्यवहारिक जीवन पर ही विशेष रूप से पड़ता है।

किन्तु यथार्थ धार्मिक जीवन बिताने वाले व्यक्ति का आचार व्यवहार शुद्ध होता है। कला का भी यही धर्म है। भारतीय चित्रकला का समाज से और धर्म से सीधा सम्बन्ध रहा है। चित्रकला भारतीय जीवन की अभिव्यक्ति बनी हुई है। जन्म से मृत्यु तक हमारा सम्पूर्ण जीवन ही चित्रकला से ओत–प्रोत रहा है। यही कारण है कि आज सभी कौशल और कोतूहल की गणना कला के अधीन की जाती है। मेरे विचार में ललित कलाओं में चित्रकला का स्थान सर्वोपरि है। समय के साथ–साथ चित्रकला ने अपना स्वरूप तो बदला है लेकिन परम्परागत सिद्धान्तों को कभी नहीं छोड़ा है।

भारतीय चित्रकला का सृजनात्मक पक्ष चित्र–ग्रन्थों में वर्णित सिद्धान्तों और मूल्यों के नियंत्रण के आधीन व्यवहारिकता का स्वरूप प्रस्तुत करता है। चित्रकार एक योगी भांति सृजना के क्रमशः प्रयोग का योगी है और चित्रकार को स्वतन्त्र प्रक्रिया का परम्परा के आधीन अधिकार प्राप्त है।

भारतीय चित्रकला क्षणिक आनन्द तक सीमित नहीं है, वह तो परमान्द की प्राप्ति का साधन है। भारतीय चित्रकारों के अन्तर्गत धार्मिक, नैतिक, तथा आदर्शवादी विचारधाराओं का पूर्ण विधान निश्चित है। भाव से रस तक की सारणी उसके संकलन का आधार है। यही भारतीय कला का प्राण है। वर्तमान के मानव के लिये, ये तत्व कसौटी पर श्रेष्ठ उतरते हैं। भारतीय कला जीवन और आध्यात्मिक समृद्धि प्रदान करती है। वह लोक कल्याण की भावना के साथ मोक्षगामी भी है। इस प्रकार भारतीय चित्रकला की परम्पराएं आध्यात्मिक परम्परा पर निर्भर करती हैं।

चित्रकला (कला) अतीत की उपलब्धियों का अनुकरण मात्र नहीं है। कला एक परम्परा है जिसका विकास नये मौलिक तत्वों से शुरू होता है। लेकिन यह तो सत्य है कि कला अतीत की परम्परा को अपने साथ सदैव विद्यमान रखती है। भारतीय चित्रकला का एक आदर्श रहा है। उसने सदैव सामाजिक व्यवस्था को मजबूत करने के लिये ही कार्य किया है। मौलिकता और परम्परा के दो अभिन्न पक्ष दिखलाई पड़ते हैं जिसका स्पष्ट निराकरण प्राचीन चित्रकला की सैद्धान्तिक एवं परम्परावादी दर्शन है। जिसको आधुनिक बनाने के लिये प्रयोगवादी मौलिक तकनीकि का प्रयोग देखा जा सकता है।

भारतीय चित्रकला में परम्परागत स्वरूप में आध्यात्मिकता के सिद्धान्त से आत्मगत सौन्दर्य को समकालीन सिद्धान्त को कभी पृथक नहीं किया जा सकता है। भारतीय समाज में जीवन दर्शन मूल्यों का आधार बना है। चिन्तन ने चित्रकला को दार्शनिक पक्ष की बहुत मजबूत बना दिया है। मानव दर्शन की विषयवस्तु चित्रकला का स्रोत बनी है। भारतीय चित्रकला के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन करने से पता चलता है कि भारतीय चित्रकला की परम्परा सदैव सामाजिक मूल्यों के साथ जुड़ी दिखलाई पड़ती हैं। उसमें समाज का ही प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ता है। अतः भारतीय चित्रकला की परम्परा समाज की आवश्यकता के अनुरूप विकसित हुई है।

कला में धर्म के स्वरूप की छाया, इसी बात का प्रतीक है कि उसका स्वरूप संतुलित व्यवहार में निखरा है। भारतीय चित्रकला में चित्रकार की अनियमित सौन्दर्यीकरण भावनाओं को सैद्धान्तिक परम्परा ने ही नियंत्रित किया है। चित्रकार भावना को किस प्रकार अंगीकार करता है यही उसकी सृजना का आधार बनता है। धर्म के साथ जीवन का भारतीय दृष्टिकोण सामान्य जन जीवन की नित्य प्रति की क्रियाशीलताओं और क्रियाकलापों पर आधारित रहती है। यह भी चित्रकला का परम्परावादी स्वरूप ही है और कभी खत्म नहीं होता है।

भारतीय चित्रकला की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उसकी आलम्बन सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रहा है। इसके लिये भारतीय चित्रकला की प्रतिभा सर्वोच्च रही है। भारतीय चित्रकारों ने भारतीय चित्रकला को कभी भी वासनातृप्ति का साधन नहीं बनाया। भारतीय चित्रकला का दर्शन सदैव ही आध्यात्मिक रहा है और इसी कारण भारतीय चित्रकला समाज की निम्न विचारों से सदा ही बची रही है। इसका यही दर्शन एवं सात्विक कल्पना समाज को लगातार सत्ता की प्रेरणा और मूल्यों को अपनाने के लिये बाध्य करती रही है। भारतीय चित्रकला की परम्परा धर्म प्रधान रही है धारणा यही है कि भारतीय चित्रकला का जन्म धार्मिक सेवा के उद्देश्य से हुआ है। धार्मिक भावना का भारतीय चित्रकला में महत्व दर्शाते हुये डॉ० आर०के० मुखर्जी ने माना है कि धर्म ही भारतीय चित्रकला की परम्परा का प्रथम स्रोत है। चित्रकला के प्रीचन ग्रन्थों में जहां चित्रकला के सैद्धान्तिक एवं परम्परावादी स्वरूप के प्रसंग आये हैं वहां धर्म प्रधान बताया है।

भारतीय चित्रकला की परम्परा में 'रस' की महत्व दिया है और सौन्दर्य को बहुत कम महत्व देते हुये। आनन्द के स्थान पर परमानन्द (रसानन्द) को ही अनिवार्य बताया गया है आध्यात्मिक शान्ति की प्राप्ति जो निश्चित रूप से एक आन्तरिक गुण है तथा जिसके प्राप्त कर लेने पर मानव की बाह्य स्वरूप को इतनी रूचि नहीं रहती, सामान्यतः एक स्थायी एक गरिमामयी तत्व है। चित्रकला में सौन्दर्य के विषय में आदर्श का स्तर निश्चित करने में इस आत्मवाद का आन्तरिक ज्ञात प्राप्त करना अवश्य बताया गया है। मनोरंजन क्षणिक है जबकि ''रस'' स्थायी है। 'रस' की उपस्थिति दोनों ही परिस्थितियों में होती है किन्तु परमानन्द की प्राप्ति केवल ''रस'' से ही संभव है।

भारतीय चित्रकला का स्वरूप परम्परावादी और सैद्धान्तिक है। भारतीय चित्रकला प्रारम्भ से मध्य तक एक परम्परावादी और सैद्धान्तिक प्रक्रिया के रूप में ही दिखलाई पड़ती है। भारतीय चित्रकला का स्वरूप धार्मिक और दार्शनिक रहने के कारण उसकी अवस्थिति सिद्धान्त और परम्परा ने सदैव ही नियंत्रित की है। भारतीय चित्र के परम्परावादी स्वरूप और उसके निश्चित सिद्धान्तों का अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों जैसे – कामसूत्र, चित्रलक्षण, शिल्पशास्त्र और श्रीविष्णुधर्मोत्तर पुराण (चित्रसूत्र) में सविस्तार विवरण सहित मिले हैं।

भारतीय चित्रकला परम्परावादी दर्शन और निश्चित सृजना के सिद्धान्तों के साथ चलती रही है। जिसके फलस्वरूप उसपर समाज, संस्कृति और साहित्य का पस्ठष्ट प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डॉ0 आर0 के मुखर्जी, प्रोफेसर रणवीर सक्सेना, कला और जीवन
- डॉ0 सत्येन्द्र नाथ, काव्य, कल्पना और साहित्य
- डॉ0 के0 वी0 सन्दाराजन, भारतीय धार्मिक कला